अंजन्मा आयो रे

दोहा ;. नहीं अकल्पित अघटित विपरित करने जग उद्धार
आज अजन्या जन्म लियो है करो सकल जयकार ॥

अजंन्मा आयो रे, मेहेररूप धरे ॥धू. ॥।

जागो ब्राह्ममुहूर्ती मानव, निराकार बन आया मानव।
यह ही सुबेला मीले जीव-शिव अमरित पान करे ॥१॥

वही राम घनश्याम मनोहर, अनहद नाद करेगा सत्वर
खोलो रे निज हियका मंदिर, प्रभु आये द्वार ॥॥२॥।

महानाद ॐकार उठेगा, मोहपटल शतविदीर्ण होगा
जो जागेगा वो पायेगा मूरख व्यर्थ मरे ॥॥३॥।

जागो मोहनींद त्यागो रे, मायाबंधन अती घनेरे
मेहेर मेहेर नाम जपो रे, समय न जाय टरे ॥४॥।

ज्यों ज्यों समीप मेहेर प्रगटन, माया तुझे कसेगी छिनछिन
मधुसूदन ना छूटे दामन, यह ही ध्यान धरे ॥५॥।